

आज का पुरुषार्थ 18 March 2023

Source: BK Suraj bhai

Website: www.shivbabas.org

धारणा – “अब हमें इतना पुरुषार्थ करना है .. जिससे हमारी प्युयोर एनर्जी चारों ओर इतना फैले कि .. देवकुल की पवित्र आत्मायें बाबा की ओर खींचे चले आये ”

हम फालो फादर कर रहे हैं। हमें ब्रह्मा बाबा के समान सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है। ताकि हम से प्युयोर एनर्जी चारों ओर फैलती रहे। प्रकृति का भी कल्याण होता रहे और वातावरण भी शुद्ध होता रहे।

और जितना जितना हम निर्विकारी बनेंगे तो देवकुल जो पवित्र आत्मायें हैं उन्हें आकर्षण होगा पहले हमारी ओर और वो हमसे जायेंगी बाबा के ओर।

निर्विकारी बनने से सेवाओं में भी बहुत वृद्धि प्राप्त होगी। हम सूक्ष्म रूप से देख सकते हैं अपने में। जिसकी पवित्रता की स्थिति जितनी श्रेष्ठ है, उनकी सेवायें भी उतनी ही श्रेष्ठ है।

तो हम अपने को निर्विकारी बनायेंगे। और **क्रोध** को सम्पूर्ण रूप से समाप्त करेंगे। हमारे मन में भी **चिड़चिड़ापन न हो**। कभी कभी मन में थोड़ी उत्तेजना किसी में आ जाये, थोड़ा रोब आ जाये, किसी से बदले लेने की भावना हो जाये .. यह सब क्रोध के सूक्ष्म अंश है।

तो हम ध्यान रखेंगे के हमें बिल्कुल शीतल बन जाना है। क्रोध या चिड़चिड़ापन कहीं भी किसी को भी प्रिय नहीं होता।

यह क्रोध का एक ऐसा अंश है जो हमारी **सूक्ष्म एनर्जी** को धीरे-धीरे खाने लगता है। खुश नहीं रहने देता मनुष्य को। उसके मन को विचलित करता रहेगा, **एकाग्रता** को नष्ट करता रहेगा। तो हमें क्रोध मुक्त तो होना ही है।

बाबा ने कई बार यह अभियान चलाये (gave directions) है, और बहुतों ने इसपर बहुत सफलता पाई है। बाबा का बनने के बाद बहुत आत्मायें क्रोध का अंश को समाप्त कर चुके है।

तो हम भी **अब ध्यान देंगे** → जितना भी क्रोध किसी के अंदर बचा हो, वह कब आता है, क्यों आता है .. उसके कारण को ढूंढ लेंगे। किस परिस्थिति में मुझे क्रोध आता है, चिड़चिड़ापन आता है, उसे चेक (check) करेंगे।

और **ज्ञान** के किसी भी प्वाइंट का प्रयोग वहाँ पर हम करेंगे। इसका स्वयं अपने में निरिक्षण करेंगे। और कौन सी ज्ञान की प्वाइंट आपको उस समय फायदा देगी, चित को **शान्त** रखने में, मन को **शीतल** रखने में .. इसका खुद उपयोग करेंगे।

तो अपने पास कई सारी प्वाइंट्स रख लेंगे, जिनके आधार से हम अपने क्रोध को नष्ट करते चलेंगे। परन्तु यह बात हमें कभी भी भूलना नहीं चाहिए कि, विकारों को नष्ट करने के लिए हमें **योग शक्ति** की परम आवश्यकता होती है।

हमें **स्वदर्शन चक्रधारी** बनना परम आवश्यक है। क्योंकि हमारे पाँचों स्वरूप क्रोध मुक्त है, सम्पूर्ण पवित्र है, निर्विकारी है। जितना जितना हम **स्वरूपों की स्मृति** में रहेंगे .. तो स्मृति से स्थिति बनती जायेगी।

बार-बार अगर हम इस स्मृति को लायेंगे →

**" मैं तो पूज्य आत्मा हूँ .. परम पूज्य .. सम्पूर्ण निर्विकारी हूँ ..
निर्विकारी स्थिति के आधार पर ही तो मैं परम पूज्य हूँ "**

इस तरह हमारी स्थिति निर्विकारी बनती जायेगी। साथ में योगबल की भी परम आवश्यकता है। ताकि कोई भी विपरीत परिस्थिति आ जाये, हमारी मन की शान्ति को नष्ट करने लगे .. उसमें हम मन में संतुलन रख पाये।

इसके लिए योग शक्ति की परम आवश्यकता है। विना योगबल के कोई भी **निर्विकारी** नहीं बन सकता, माया पर विजयी नहीं बन सकता।

तो आज सारा दिन हम यह अभ्यास करेंगे ..

" मैं विजयी रतन हूँ "

इस गुड फीलिंग्स से हमारे अंदर की शक्तियाँ विजय दिलाने लगेगी।

" मैं कल्प कल्प की विजयी रतन हूँ .. कल्प पूर्व भी मैंने इस माया को .. इस क्रोध को .. इस चिड़चिड़ापन को जीता था "

.. यह स्मृति हमें पुनः विजयी बनायेगी। हमारी शक्तियों को जागृत करेगी।

यह बहुत गुड फीलिंग दिन में कई बार हम करे →

" मैं कल्प कल्प की विजयी आत्मा हूँ "

और कुछ देर हर घन्टे में, दस सेकेन्ड भी बैठा करें जाकर **परमधाम** में ..
सर्वशक्तिमान की किरणों के नीचे ..

ताकि उनकी सम्पूर्ण एनर्जी (energy) हममें समा जाये .. हम आत्मायें
सम्पूर्ण **पावरफूल** बन जाये ...

और उस माया को चैलेंज (challenge) कर दे, सदा के लिए नष्ट कर दे ।

॥ ओम शान्ति ॥

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org